महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२८/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरुप अवस्था में स्थित हो जाए... सभी देखें अपना मूलस्वरुप... अपने मूलस्वरुप को स्पष्टता से अनुभव कीजिए... फील करें अपने मूलस्वरुप को... देखिए आपका मूलस्वरुप... चमकता सितारा ब्रेन के अंदर... हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में... अपने सिंहासन पर विराजमान है... देखिए आपका सत्य स्वरुप... यह आप हो... कुछ क्षण के लिए सभी अपने मूलस्वरुप को देखिए।

कुछ अनुभव किया? हर कोई अपने से चेक करें—क्या अनुभूति आ रही है, जब आप आपके मूलस्वरुप को देखते हो? आपको कैसे महसूस हो रहा है? जब-जब आप मूलस्वरुप का अभ्यास करते हो या अपनी मूलस्वरुप स्थिति में बैठते हो हर बार चेक करें आपको कैसे अनुभव होता है; और उस अनुभव को आप आपके बुद्धि के अंदर नोट करके रखना। उस अनुभव की फीलिंग को, जो आपने महसूस किया, उसे स्मृति में रखना।

क्या आप आत्माओं को अपने मूलस्वरुप में, मूलस्वरुप के अभ्यास में, रस आता है? हर कोई अपने से चेक करें। यह आपकी वही ओरिजिनल अवस्था है, जो आपको निर्माण किया था। जब-जब आप आत्माएं कॉन्ससियस्ली बैठकर अपने मूलस्वरुप का अभ्यास करते हो, उससे आप आत्मा का मूलस्वरुप और जागृत होता जाता है। अगर कोई सोया होता है, तो उसको जगाने के लिए उसको उठाना पड़ता है, उस ही प्रकार से आत्मा सुप्त अवस्था में सो गई है, मायावी संसार में रहने के कारण; अभी उसको जगाना होगा, जागृत करना

होगा। यह वही अभ्यास है जिससे आप आत्मा जागृत होती जाएगी; और जितनी-जितनी आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में आती जाएगी या जितनी-जितनी आत्मा स्वयं को जागृत कर पाएगी या जागृत करती जाएगी, उतनी-उतनी आत्मा के अंदर ज्ञान की समझ आती जाएगी। अगर किसी को कोई बात समझ में नहीं आती, उसका मतलब क्या है? जिसे वह बात समझनी है, वही उपस्थित नहीं है या वह जागृत नहीं है। इसलिए कभी-कभी कोई कहते हैं—हमें यह बात नहीं समझ में आयी, क्या फिर से कोई समझा सकते हैं कि यह कैसे करना है? तो हर कोई अपने बुद्धि की चेकिंग जरूर करना। जितना बुद्धि में जो कुछ पढ़ा लिखा हुआ संसारी बातों का भरा हुआ कचरा होगा, उतना आपकी समझ जो आध्यात्मिक रूप से होनी चाहिए, वह आप आत्मा के पास नहीं आएगी। इसलिए जिसको सच में अपनी समझ की शक्ति को इमर्ज करना है, जिसको अपने कल्याण की पूर्ण समझ लेनी है, जिसको यह समझ लेनी है कि हम आत्मा कैसे पूर्ण रूप से परिवर्तित हो सकते हैं—इन सभी समझ को लेने के लिए आपको आपके मूलस्वरूप स्थिति में आना होगा। जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप स्थिति में आते जाएंगे, उतना-उतना आपकी समझ की शक्ति इमर्ज होती जाएगी और आप हर एक बात को समझना, आपको हर एक बात की गहराई से समझ मिलती जाएगी; और वह समझ आप आत्मा के अंदर धारणा में उतरती जाएगी।

जब परमात्मा से कभी कोई श्रीमत मिलती है या आज्ञा मिलती है, किसी भी प्रकार की कोई डायरेक्शन मिलती है, तो अगर उस समय पे किसी को भी वह श्रीमत पालन करने में, वह आज्ञा, वह डायरेक्शन एज इट इज़ पालन करने में अगर कुछ भी कठिनाई आती हैं, तो आप समझ जाना कि आप आपकी जो समझ की शक्ति है, उसे अब तक आपने इमर्ज नहीं किया है। आपने उसे अब तक जागृत नहीं किया है, क्योंकि आप आपके मूलस्वरूप स्थिति में नहीं हो। इसलिए हर कोई चेक करना कि कभी किसी को कोई श्रीमत पालन करने में आसान लगता है और कभी किसी को कोई और श्रीमत, कोई और आज्ञा परमात्मा की पालन करने में कठिनाई होती है, आगे-पीछे होता है। जो ऊर्जा आपके अंदर वह शिक्षा धारण

करने के लिए, वह आज्ञा पालन करने के लिए पर्याप्त चाहिए, वह ऊर्जा आपके पास ना होने के कारण आप वह श्रीमत, वह आज्ञा, वह डायरेक्शन एज इट इज़ पालन नहीं कर पाते। भल आप आत्मा चाहती हो कि आप हर श्रीमत को एज इट इज़ एक्यूरेटली पालन कर पाए, परमात्मा की हर शिक्षा को एज इट इज़ अपनी धारणा में उतार पाए; पर यह हुई आत्मा की चाहना। पर आत्मा अगर जागृत नहीं है और सिर्फ वो कोई चाह रही है, किसी भी प्रकार से उसके अंदर बदलाव का उसका एक संकल्प हो रहा है, पर आत्मा अगर जागृत नहीं है, तो उसकी शक्तियां इमर्ज नहीं हो सकती। आत्मा के पास परमात्मा ने सभी शक्तियों का खजाना रखा है। हर प्रकार के कार्य का, हर प्रकार के कर्मों का, हर प्रकार के व्यवहार का, हर प्रकार की समझ का, हर प्रकार की शक्ति आत्मा के अंदर परमात्मा ने रखी है। पर यह सभी शक्तियां कब इमर्ज होगी? जब आत्मा अपने मूलस्वरूप स्थिति में आएगी। जैसे-जैसे आप आपके मूलस्वरूप अवस्था में आते जाएंगे आप अपने आप को देखते जाएंगे, कि आपके पुराने संस्कार परिवर्तित हो गए, आपका पुराना स्वभाव संस्कार परिवर्तित हो गया, आपका सभी के साथ का व्यवहार परिवर्तित हो गया, आपकी हर एक बात में परिवर्तन आ रहा है; क्योंकि आप आत्मा जागृत हुई और उसके कारण आपकी शक्तियां जागृत हुई।

आत्मा के अंदर जितने भी गुण है, शक्तियां है, दिव्य गुण है, पांच तत्व है—वह सभी एक एक एक शक्ति है। यह सभी शक्तियां तभी जागृत होगी जब आप आत्मा जागृत होगी। आप आत्मा से करंट, चार्जिंग आप ही के सभी गुण-रूपी, शक्ति-रूपी, दिव्य गुण-रूपी सभी शक्तियों को चार्जिंग मिलती है। जैसे-जैसे आप आत्मा आपके मूलस्वरूप अवस्था में आती जाएगी, आपके सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण, सभी शक्तियां अपने-अपने मूलस्वरूप अवस्था में आते जाएंगे। वह शक्तियां मूलस्वरूप अवस्था में आना, माना वह संपूर्ण रूप से जागृत हो जाना और जागृत होके वह अपने कर्म कर पाएंगे जो उनके ओरिजिनल कर्म है। पर आत्मा अगर अपनी स्थिति में नहीं है, तो जो पार्ट बजने वाला है, वह मायावी अस्तित्व के द्वारा बज जाता है। हर कोई अपने से चेक करें कि मुझ आत्मा के अंदर प्रेम इस गुण, इस शक्ति का—यह शक्ति कितनी

जागृत है? मुझ आत्मा की सुख की शक्ति कितनी जागृत है? मुझ आत्मा की शांति की, आनंद की, पवित्रता की शक्ति की शक्ति कितनी जागृत है? मुझ आत्मा के अंदर जितनी अष्ट शक्तियां है वह कितने जागृत हुए हैं? मुझ आत्मा के जो दिव्य गुण है—दिव्यता, नम्रता, अंतर्मुखता—कितनी जागृत है? मुझ आत्मा के अंदर ही पांच तत्वों की ऊर्जाओं की शक्ति है, वह कितने जागृत है? हर कोई अपनी आत्मा की चेकिंग करें।

अगर किसी के साथ व्यवहार करते, कम्युनिकेशन करते हमारा अगर व्यवहार उनके साथ सुखकारक नहीं होता या प्रेम स्वरूप वाला नहीं होता, तो समझ जाना आपके अंदर की प्रेम की शक्ति, आप आत्मा के अंदर की सुख की शक्ति अभी भी जागृत नहीं है। मान लो आपसे किसी के साथ व्यवहार में ५०-५०% अच्छा व्यवहार होता है और ५०% बुरा व्यवहार होता है—यह हुआ ५०-५०% माना आप आत्मा के अंदर जो व्यवहार करने की समझ की शक्ति है, वह ५०% ही जागृत है। इसलिए सभी आत्माओं को अपने सभी शक्तियों को जागृत करना आवश्यक है।

संगमयुग में आत्माओं का एक ही कर्तव्य है—सबसे पहले अपने मूलस्वरूप अवस्था में पहुंच जाना, और अपने सभी शक्तियों को जागृत करके अपने कल्याण में लगाना; और आप आत्मा का कल्याण करके विश्व के कल्याण में आप आत्मा की सभी शक्तियों को लगाना, आप आत्मा के द्वारा विश्व के कल्याण में लग जाना। संगमयुग में बाकी किसी भी आत्मा का कभी भी कोई और कर्तव्य या उद्देश्य नहीं होता। सबसे पहले स्वयं का कल्याण करना, और स्वयं का कल्याण करके विश्व कल्याण में, सभी के कल्याण में मददगार बनना। विश्व के कल्याण में आप आत्माएं किस प्रकार मददगार बन सकते हैं? हर कोई आत्मा अपना कल्याण करके विश्व के कल्याण में मददगार अवश्य बन सकती है। पर वह कब बन सकती है? जब आत्मा की सभी गुण-शक्तियां जागृत होंगे। उन सभी शक्तियों से विश्व में, विश्व कल्याण के कार्य में, विश्व की सभी आत्माओं के, सभी अस्तित्व के कल्याण के कार्य में आत्मा के गुण-शक्तियां सेवा में लग सकती है। आपके द्वारा, आप आत्मा के द्वारा जब विश्व-सकाश दिलाया जाता है तो उसमें आप आत्मा की गुण-शक्तियों द्वारा

ही सभी गुण-शक्तियों का सकाश विश्व में फैलाया जाता है। इसी प्रकार से आप आत्माएं विश्व-कल्याण के कार्य में मददगार बन सकती है। हर कोई आत्मा विश्व कल्याण के कार्य में मददगार बन सकते हैं—अपने गुणों और शक्तियों को जागृत करके; फिर उनसे जो वाइब्रेशन निकलेंगे, वह विश्व के कल्याण में लग जाएंगे। पर जब तक आप आत्मा जागृत नहीं हो, आपके गुण-शक्तियां जागृत नहीं हो, तो आपका कल्याण कैसे होगा? और जब तक आप आपका कल्याण नहीं कर पाओगे, आप विश्व में किसी के भी कल्याण के लिए मददगार नहीं बन सकते। इसलिए सभी को, सभी आत्माओं को अपनी जिम्मेवारी लेनी होगी।

परमात्मा के पास आप आत्मा को, आप आत्मा का समर्पण करना बहुत जरूरी है; क्योंकि सभी की आत्माएं अति बीमार है। जब तक दिल से, सच्ची दिल से आत्माओं का संकल्प नहीं उठता कि यह जो आत्मा है, हम आत्मा का परमात्मा के पास संपूर्ण रूप से समर्पण है; हम आत्मा की सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण, अष्ट शक्तियां—इन सभी शक्तियों के साथ हमारे आत्मा का संपूर्ण समर्पण हम परमात्मा को करते हैं, तब तक आपकी परिवर्तन की यात्रा शुरू नहीं होगी। आपकी शक्तियां उस प्रकार से जागृत नहीं हो सकती, क्योंकि आप आत्मा को ताकत परमात्मा से लेनी होगी। जितनी-जितनी ताकत आप परमात्मा से लेते जाएंगे, आप आत्मा आपके स्थिति में मूलस्वरूप में आती जाएगी। एक है आपको मूलस्वरूप में बैठने का अभ्यास करना है; पर वह अभ्यास भी कब सक्सेसफुल हो पाएगा? जब सबसे पहले आप आत्मा का समर्पण परमात्मा के पास हुआ होगा तो; क्योंकि आप आत्मा खुद से अपने मूलस्वरूप में कभी भी नहीं आ सकते। परमात्मा को आप आत्मा का समर्पण किए बिना आपको मूलस्वरूप में आने की शक्ति नहीं मिलेगी। इसलिए सबसे पहले परमात्मा को आप आत्मा का आत्मिक रूप में समर्पण करना आवश्यक है। फिर परमात्मा ही आप आत्मा के अंदर की एक-एक बीमारी को मुक्त कर पाएंगे। परमात्मा की एक श्रीमत, परमात्मा की एक आज्ञा, परमात्मा की एक शिक्षा को पालन करने से आप आत्मा की एक-एक बीमारी मुक्त होती है। आप आत्मा का एक-एक मायावी अस्तित्व मुक्त होता है। पर यह कब होगा? जब सच्ची दिल

से परमात्मा के पास आप आत्मा का समर्पण होगा। सभी आत्माएं जागृत हो जाए। अगर सभी आत्माओं का, सच्ची दिल का संकल्प होगा कि उनको उनकी आत्मा का संपूर्ण समर्पण परमात्मा के पास करना है, तो अपने आप आत्माओं को रास्ता मिलता जाएगा अपने कल्याण के लिए और आप आत्मा के संपूर्ण परिवर्तन के लिए। परमात्मा की हर एक शिक्षा आपको पूरा परिवर्तित कर देगी। आप आत्मा खुद से कभी भी नहीं बन पाएगी। जो रचयिता है, उस रचयिता को आपको समर्पण करना होगा। फिर वह रचयिता अपनी शक्ति रचना में भर के उस रचना को परिवर्तित होने के लिए पूर्ण ताकत प्रदान करते हैं और फिर उस रचना का परिवर्तन शुरू हो जाता है।

संगमयुग में आत्माओं का एक ही कर्तव्य है—आपको आपके रचयिता की श्रीमत पर, आज्ञा पर, शिक्षाओं पर चलना; और इस संगम में परमात्मा जो सभी के रचयिता है, सभी यूनिवर्स के, सभी शिव बाबाओं के, सभी के जो रचयिता है, उनकी श्रीमत पर सभी को चलना होगा। परमात्मा की कोई भी श्रीमत हो, वह कोई भी श्रीमत कभी भी छोटी नहीं होती। परमात्मा की कोई भी शिक्षा हो, फिर वो स्थूल रूप से हो या सूक्ष्म रूप से दी गई हो, वो कोई भी शिक्षा छोटी नहीं होती। उस हर श्रीमत में, हर शिक्षा में आपका परिवर्तन होता जाता है। इसलिए इस संगम में जब परमात्मा इस यूनिवर्स में आए हैं, तो सभी को अपना संपूर्ण समर्पण परमात्मा के पास करना होगा—अगर आप सभी को आपका पूर्ण, संपूर्ण परिवर्तन करना चाहते हो तो। परमात्मा कभी कोई श्रीमत देते हैं; “बच्चे यहां बैठ जाओ”... आप आत्मा नहीं जानते उस एक श्रीमत में, उस एक आज्ञा में क्या ताकत है! उस एक बैठने की आज्ञा में आप आत्मा का कितने तो जन्मों का कितना कुछ सेटल हो जाता है! आप आत्मा के अंदर के कौन-कौन से मायावी अस्तित्व मुक्त होते हैं, यह आप नहीं जानते। जब परमात्मा कोई शिक्षा देते हैं कि बच्चे सदा चेहरे पर मुस्कान रहे, आप नहीं जानते इस एक शिक्षा में आपके अंदर के कितने सारे मायावी अस्तित्व मुक्त हो जाते हैं; वो भी आपके कितने सारे जन्मों के! इसलिए परमात्मा की कोई भी आज्ञा हो, कोई भी श्रीमत हो, उसे आप दिल से पालन करना। आप

देखना, जिस क्षण आप उस श्रीमत को, उस आज्ञा को, उस शिक्षा को पालन करते हैं, आप चेक करना आपके अंदर क्या परिवर्तन आया। हर कोई आत्मा जागृत हो जाए। यह पद्मा पदम भाग्यशाली संगमयुग है जहां पर सभी को परमात्मा के वाइब्रेशन मिल रहे हैं और सभी के पास संपूर्ण मौका है, परमात्मा से अपने आप को पूर्ण परिवर्तन करने का। आपके मायावी अस्तित्व आपसे पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो पाएंगे जब तक आप आपके मायावी संसार में हो; और ऐसे नहीं हो सकता कि आप आपके मायावी संसार में रहते, आप आपके मायावी अस्तित्व से छूट सको। बस सभी आत्माओं को अपना दिल का संकल्प उठाना होगा अगर वह संपूर्ण परिवर्तन करना चाहते हैं तो—कि मुझ आत्मा का संपूर्ण समर्पण परमात्मा के पास जल्द से जल्द हो जाए। दिल का संकल्प आपके रास्ते खोल देगा और परमात्मा की ताकत ही आप सभी को पहुंचा देगी। मायावी अस्तित्व विचार करते रहेंगे—नहीं संसार में है सब ठीक है। पर आप आत्मा की अगर दिल सच्ची है, आप आत्मा का आपके परिवर्तन के लिए और आपके कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प है, तो आपके रास्ते सहज रूप से खुलते जाएंगे। क्योंकि आपका दिल का एक संकल्प, आपका दृढ़ संकल्प—उसके लिए आप आत्मा की पूरी ऊर्जा लग जाती है; और परमात्मा के पास दिल का संकल्प ही पहुंचता है, और दिल के संकल्प को परमात्मा की ताकत ऑटो में मिल जाती है। उस अस्तित्व को अलग से परमात्मा से ताकत कभी लेनी नहीं पड़ती, उस अस्तित्व को परमात्मा से ताकत मिलती जाती है, उसको उसके सारे रास्ते खुलते जाते हैं—पर सच्ची दिल का उठा हुआ सच्चा संकल्प हो। अगर आपका लक्ष्य कायम है कि कुछ भी हो जाए, मुझे मुझ आत्मा का संपूर्ण कल्याण करना ही है; मुझे मुझ आत्मा का संपूर्ण परिवर्तन करना ही है—अगर यह किसी भी आत्मा का दृढ़ संकल्प होगा, तो परमात्मा की ताकत मदद के रूप में उसके साथ रहेगी, उसके सारे आगे के दरवाजे खुलते जाएंगे और वह आत्मा, वह अस्तित्व अपनी कल्याण की यात्रा में लगता जाएगा। जहां दिल होती हैं, वहाँ मार्ग अपने आप मिलता जाता है।

संगम में सभी आत्माओं का सिर्फ एक ही दिल का सच्चा संकल्प हर संगम पर सदैव होना चाहिए कि—मुझे मुझ आत्मा का संपूर्ण कल्याण करना है, मुझे मुझ आत्मा का संपूर्ण परिवर्तन करना है। संगम पर ही आत्मा संकल्प उठा सकती हैं कि मुझे मुझ आत्मा की संपूर्ण शुद्धि करनी है। बाकी किसी भी युग में आत्मा ना तो यह संकल्प उठा सकती है और ना ही यह संकल्प उसका कभी पूर्ण हो सकता है। संगम में ही आत्मा को पूर्ण चांस है अपने आप को पूर्ण परिवर्तन करने का। संगम पर कभी भी कोई भी आत्मा का कभी भी मायावी संकल्प नहीं होना चाहिए कि—मुझे भी कुछ बड़ी सेवा मिले, मुझे भी कभी कोई बड़ा पद मिले, मुझे भी कोई बड़ी पोजीशन मिले, मैं भी कुछ बड़ी सेवा संभाल सकूं, मुझे यह सेवा मिले। यह सब मायावी इच्छाएं है, मायावी संकल्प है। संगम है ही सिर्फ और सिर्फ और सिर्फ आत्म-कल्याण का और आत्म-परिवर्तन का युग। बाकी कोई भी किसी भी प्रकार का वह युग नहीं है। संगम पर उस यूनिवर्स के शिव बाबा आते हैं आत्माओं को मार्गदर्शन करने, उनके कल्याण-अर्थ और उनके परिवर्तन-अर्थ; और इस संगम में स्वयं परमात्मा आए हैं सभी के कल्याण-अर्थ, सभी के परिवर्तन-अर्थ। इसलिए संगमयुग में कभी भी कोई भी आत्मा का कभी भी किसी भी प्रकार से कोई पद के लिए, या किसी पोस्ट के लिए, या किसी अष्ट रतन बनने के पीछे या १०८ में आने के पीछे, या १६०० में आने के पीछे, या सतयुग में आने के पीछे, या त्रेता में आने के पीछे कोई भी स्वार्थ नहीं होना चाहिए। यह जो कुछ भी है यह सब मायावी है। हर कोई जागृत हो जाए। जब आत्मा अपनी उस मूलस्वरूप अवस्था में आती जाएगी आत्मा की शुद्धि होती जाएगी, अब आत्मा अपने उस उच्च अवस्था में पहुंचती जाएगी; उसके लिए अगले कल्प में उस अवस्था के अनुसार, जो अवस्था उस आत्मा ने प्राप्त की है, उस अवस्था के अनुसार उसको पार्ट मिल जाएगा। वह पार्ट मिले अगले कल्प में बेस्ट पार्ट बजाना है, बड़ा पार्ट बजाना है—इसके लिए मुझे संगम में परिवर्तन नहीं होना है। हर आत्मा अपना संकल्प शुद्ध करें। फिर आप कलयुग के संसार से मुक्त होकर आपने सतयुगी संसार में आपको अटका दिया। इसलिए संगम में सिर्फ आत्मा को अपना संपूर्ण कल्याण करना है, अपना संपूर्ण परिवर्तन करना

है—यह एक ही उद्देश्य सदा रहना चाहिए; फिर आगे जो भी कल्प में, जो भी पार्ट मिले, जब भी मिले। संगम में किसी भी प्रकार की कोई भी इच्छा आत्मा को सांसारिक रूप से कभी भी उत्पन्न नहीं करनी है। आत्म-कल्याण और आत्म-परिवर्तन—यही संगमयुग के लिए परमात्मा की श्रीमत है सभी आत्माओं के लिए। उससे अलग कोई और उद्देश्य किसी भी आत्मा का कभी भी नहीं हो सकता। इसलिए सभी अपने संकल्पों को देखें कि क्या आप आत्मा के सच्ची दिल से आप आत्मा के कल्याण के लिए और परिवर्तन के लिए आपका संकल्प उठता है? या आपको मायावी पद-पोजीशन अध्यात्म में आकर भी चाहिए? इस प्रकार का संकल्प आप आत्मा के पास बार-बार आपके मन में उठ रहा है—हर कोई चेक करें; और आप आत्माएं आपके संकल्पों की आज शुद्धि करें। किसी भी प्रकार का कोई भी अशुद्ध या स्वार्थ-भाव का कोई भी संकल्प होगा, तो आज के दिन में उस संकल्प को मुक्ति दे और आज के दिन में यह नया संकल्प उठाए—कि इस संगम में मुझ आत्मा को मुझ आत्मा का संपूर्ण कल्याण और संपूर्ण परिवर्तन करना ही है, और वह परिवर्तन परमात्मा से करना है। हर कोई आत्मा अपना सच्ची दिल का संकल्प रखे।

आप आत्माएं जो परमात्मा से परिवर्तित होगी, जो आत्माएं परमात्मा से अपने कल्याण को उपलब्ध होगी, उन आत्माओं का कभी भी किसी भी युग में अकल्याण नहीं हो सकता; क्योंकि आप आत्माएं परमात्मा से परिवर्तित हुई है। आप आत्मा के अंदर परमात्मा की शक्ति है, इसलिए आपका परिवर्तन हो पाएगा।

तो आज के दिन में यही होमवर्क है सभी आत्माओं के लिए—अपने अंदर के अशुद्ध मायावी संकल्पों को हर प्रकार से मुक्ति देना और परमात्मा से आप आत्मा का संपूर्ण कल्याण हो जाए, परमात्मा से आप आत्मा का संपूर्ण परिवर्तन हो जाए—यह दिल का संकल्प रखना। सच्ची दिल पर साहेब राजी। भल इस समय आप आत्मा किसी भी अवस्था में हो, कोई भी प्रकार की स्टेट में हो पर सच्ची दिल के लिए कोई अवस्था, कोई स्टेट मायने नहीं रखती। सच्ची दिल, सच्ची दिल ही होती है। फिर आत्मा कितनी भी तमोगुणी हो जाए, कितनी भी तमोप्रधान हो जाए, सच्ची दिल का संकल्प परमात्मा के पास पहुंचता ही पहुंचता है

और उसको परमात्मा से ताकत मिल ही जाती है। यह एक अटल सत्य है। तो आज के दिन में सभी आत्माएं अपने संकल्प की शुद्धि करें और अपना शुद्ध संकल्प रखे, सच्ची दिल का। परमात्मा सच में जादूगर है। वह कुछ भी कर सकता है, आपके कल्याण के लिए और परिवर्तन के लिए। सभी आत्माएं जागृत हो जाए।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः